विश्व मानव के पुजारी-
महात्मा फ्रान्सिस



लेखक—
बाबू बैजनाथ गुप्त 'वृजेन्द्र'

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विश्व—मानव के पुजारी महात्मा फ्रांसिस

"हे प्रभो, मुझे अपनी शान्ति का वाहन बना। जहाँ द्वेष हो, वहाँ मैं प्रेम का बीज बोऊँ, जहाँ वैर-भाव हो, वहाँ मैं क्षमा-भाव फैलाऊँ; जहाँ शङ्का हो, वहाँ मैं श्रद्धा उत्पन्न करूँ, जहाँ अन्धकार हो, वहाँ मैं प्रकाश फैलाऊँ, जहाँ व्याधि हो, वहाँ मैं आनन्द विकीर्ण करूँ। मेरे प्रभु, मुझे ऐसी शक्ति प्रदान कर।"

"मेरे परमेश्वर, मुझे ऐसा वरदान दे कि सहानुभूति चाहने के बजाय सान्त्वना देने वाला बनूँ। दूसरों को समझाने के स्थान पर उनके भावों को समझने वाला बनूँ। दूसरों से प्रेम की अपेक्षा रखने के बजाय प्रेम देने वाला बनूँ। क्यों कि देने में ही हम पाते हैं और क्षमा करने में ही हमें क्षमा मिलती है।"

"परमात्मा के पास पहुँचने का मार्ग महल की अपेक्षा झोंपड़ी के पास अधिक है।"

मेरी आत्मा को मोह-बन्धन से मुक्त कर, जिससे मैं तेरे नाम की स्तुति कर सकूँ।"

"अपरिग्रह और त्याग वह गुण है, जिसके बल पर पृथ्वी पर रहते हुए भी देवताओं के साथ बात-चीत कर सकते हैं।"

"पवित्र और सच्चो सरलता मे साँसारिक ज्ञान को जीतने की शक्ति है।"

"दुःखी रहना शैतान का काम है।"

ये कतिपय उद्‌गार महात्मा फ्रांसिस के हैं, जो जब-तब उनके हृदय से आँसुओं के साथ, एकान्त में भी और जन-समुदाय के बीच मी निकलते रहते थे। उनके ये उद्‌गार केवल भावुक अनुभूतियाँ मात्र ही नहीं थे, बल्कि उनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्पूर्ण जीवन ही उन्हीं के अनुरूप प्रेरित और संचालित होता था। उन्हें समग्र जड़- चेतन जगत से अगाध प्रेम था और उसी के कल्याण में ही उन्होंने अपनी सारी तपस्या, सारी साधना और सारा जीवन लगा दिया था। जिसके पुण्य स्वरूप जनता ने उन्हें अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा, और असंदिग्ध विश्वास समर्पित कर उनकी अर्चना की थी। उन्होंने जन-कल्याण के लिए साधना, तितिक्षा और भौतिक कष्टों को आनन्द माना और जन-गण ने उन्हें श्रद्धा देकर शांति किया। पथिक और पथ-दर्शक की यही पावन पारस्परिका ही तो उस मांगलिक-मन्दिर का द्वार मुक्त कर देती है, जिसमे संसार-सागर के विश्रान्त प्राणी शांति, सन्तोष और विश्राम पाकर सदा-सर्वदा के लिए भव-व्याधि से त्राण पा जाते हैं।

महात्मा फ्रांसिस न केवल एक सन्त-साधक ही थे बल्कि जन-सेवा, सहानुभूति और करुणा की साकार प्रतिमा भी थे। उन्होंने समाज की सेवा करने में जिस तप, त्याग और सहिष्णुता का परिचय दिया, उसे देखते हुए यही कहना पड़ता है कि वे समाज के सेवक पहले थे और आध्यात्मिक साधक बाद में। और सच्ची बात तो यह है कि उनकी आध्यामिक साधना एकाकी आत्म-कल्याण के लिए नहीं थी, वह समाज-सेवा का ही एक प्रकार, एक रूप और एक उपाय था। वे जो कुछ निसर्ग से लेकर आए थे, केवल उसे ही नहीं, अपनी आध्यात्मिक साधना से संचित शक्ति और पुण्य भी जन-कल्याण और लोक-सेवा में लगा दिया था। वे संसार में भंडार की तरह आए और बाह्य-शून्य की तरह निस्सीम हो गए।

महात्मा फ्रांसिस का जन्म चौदहवीं शताब्दी में इटली के समुद्र-तट पर बेसे असीसी नामक एक छोटे-से नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम पिएट्रो बर्नादोन था। वे कपड़े के एक प्रसिद्ध व्यापारी और अपने व्यवहार जीवन में बड़े ईमानदार व्यक्ति थे।

पिएट्रो बर्नादोन अपने पुत्र को अपनी तरह ही एक कुशल व्यापारी बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने फ्रांसिस को थोड़ी-सी शिक्षा दिला कर अपने साथ व्यापार में लगा लिया। किन्तु फ्रांसिस को उस अल्प-ज्ञान से संन्तोष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं हुआ। वे अगाध ज्ञान-सागर में गहराई तक जाना चाहते थे। अस्तु, पिता के साथ व्यवसाय में लगे रह कर भी वे स्वाध्याय करते ही रहते थे।

दुकान पर बैठते समय भी न कोई पद्‌ज्ञान की पुस्तक उनके साथ बनी ही रहती थी। जैसे ही वे ग्राहकों से निपट कर अवकाश पाते थे, अध्ययन में लग जाते थे। उन्होंने अपनी ज्ञान-वृद्धि के लिए, पाए हुए दो-चार मिनटों का अवसर भी बेकार नहीं जाने दिया। उन्हें स्वाध्याय का इतना चाव था कि नौकर द्वारा माल लाने और दिखलाने के बीच भी जो समय मिलता था उसका उपयोग भी वे पुस्तक की कुछ वांछित पंक्तियाँ पढ़ लेने में कर लेते थे। इस प्रकार जिज्ञासा पूर्वक उन्होंने बूँद-बूँद कर जो ज्ञान संचय किया था उससे एक दिन उनका अन्तर्तम परिप्लावित हो गया।

दुकान के बाद घर का तो सारा समय वे एक प्रकार से अध्ययन में ही लगाए रहते थे। उस समय की बात ही छोड़ दीजिए, जो सर्वथा स्वतन्त्र होता था, वे तो खाना भी अध्ययन कक्ष में ही खाते थे। उनकी मेज पर शरीर और आत्मा का भोजन साथ-साथ उपस्थित रहता था। देखने वालों ने तो यह तक बतलाया है कि फ्रांसिस अपने नित्य कर्मों के समय भी स्वाध्याय से विरत नहीं रहते थे। उस समय उनके साथ कोई पुस्तक तो अवश्य ही नहीं रहती थी तब भी पुस्तक का पढ़ा विषय वे निरन्तर मनन करते रहते थे। रात में एकाग्र-चित्त होकर पढ़ने बैठ जाने पर निद्रा और आलस्य जैसे उनके जीवन से दूर चले जाते थे। उनके पिता अथवा माता को जाग-जाग कर कई बार सूचित करना पड़ता था कि रात ढल चुकी है, तुम अभी तक बैठे पढ़ ही रहे हो। इस अखंड-अध्ययन का ही यह फल था कि फ्रांसिस के लिए आत्मा, परमात्मा, जीव और जगत, संसार और प्रकृति, पुरुषार्थ और परमार्थ, सेवा और सहानुभूति, दया और क्षमा, त्याग और उत्सर्ग, सुख और दुःख का ज्ञान सामने टंगी तस्वीर की तरह स्पष्ट हो गया। इसी अध्ययन और मनन के आधार पर ही तो वे इस पावन सत्य का परिचय पा सके थे कि एकांत साधना की प्रक्षा, मुक्ति का मार्ग जन-सेवा के रूप में अधिक सुगम तथा निरापद है। इसीलिए उन्होंने लोक-कल्याण के आध्यात्मिक मार्ग को आत्म-कल्याण के लिए अङ्गीकार किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्ययन और मनन की इस मपती तारतम्यता के बीच भी फ्रांसिस अपने स्वास्थ्य की ओर से कभी उदासीन न होते थे। उन्हें पता था कि शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा आर्थिक पाँचों उन्नतियों का मूल आधार स्वास्थ्य ही होता है। स्वास्थ्य के अभाव में क्या बाह्य और क्या आन्तरिक कोई भी उन्नति नहीं की जा सकती। आरोग्य की रक्षा के लिए आहार, संयम तो उनने अपना स्वभाव बना लिया था। इसके अतिरिक्त वे नियमित व्यायाम का भी कार्यक्रम चलाते थे। व्यायाम के रूप में वे देश-काल की प्रथा के अनुसार खेल खेलते थे, तलवार का अभ्यास करते थे और घोड़े की सवारी भी।

यह उनके स्वास्थ्य ही का तो सुख था कि धनवान घर के होने पर भी किसी काम के लिए नौकर-चाकर पर निर्भर नहीं रहते थे। सारे काम स्वयं अपने हाथ से करते थे। परिश्रम का स्वभाव उन्होंने पिता से विरासत के रूप स्वीकार किया था। विद्या, व्यायाम, परिश्रम और आत्म-निर्भरता ने जहाँ उनके व्यक्तित्व और शरीर को सुगठित बना दिया था वहाँ साहस और निर्भयता का अनुदान भी दिया था। जल्दी ही वे नगर के युवकों में लोकप्रिय बन गए। सभी नौजवान उनके नेतृत्व में विश्वास करने लगे।

फ्रांसिस का जीवन-लक्ष्य जन-सेवा के माध्यम से आत्म-मुक्त के सिवाय और कुछ नहीं था कदापि मार्ग में आए किन्हीं भी कर्त्तव्यों से विमुख न होते थे। उनका विश्वास था और वे कहा भी करते थे कि मानव-जीवन के सारे छोटे और बड़े, कठोर और कोमल कर्त्तव्य ईश्वर प्रदत्त होते हैं। इनका निःस्वार्थ और निष्कलङ्क पालन, भले ही देखने में आध्यात्मिक प्रकृति का न हो, किन्तु वस्तुतः उसका प्रभाव और परिणाम आध्यात्मिक ही होता है। सावधानी केवल यह रखनी होती है कि वे कर्त्तव्य कर्त्तव्य ही हैं यों उनमें कर्त्तव्य का भ्रम-मात्र ही है। इसका निर्णय विद्यालोकित विवेक के आधार पर आसानी से हो ही जाता है। मानव-जीवन के लिए विद्या को इसीलिए ही तो आवश्यक बताया गया है कि उसमें पग-पग पर कर्त्तव्याकर्त्तव्य की परख करने की आवश्यकता होती है। अन्यथा, इस योग्यता के अभाव में मनुष्य और एणु में आकार के अतिरिक्त और कोई विशेष अन्तर ही नहीं रह जाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फ्रांसिस अपने किसी भी कर्त्तव्य से कभी मुह न मोड़ते थे। मोड़ते भी कैसे ? उन्हें जीवन में जन-कल्याण के साथ आत्म-कल्याण जो करना था। यही तो उन्होंने अपना परमं-पावन लक्ष्य निधारित किया था। कहाँ तो एक ओर उनकी दयालुता और कोमलता की यह स्थिति थी कि—एक दिन पिता की दूकान पर अकेले ही बैठे थे एक बड़ा ग्राहक आया और कपड़े का मोल-भाव करने लगा। सौदा लम्बा था। कई हजार का। अच्छी कमाई की आशा थी। फ्रांसिस बड़े सुचारु रूप मे ग्राहक से बात-चीत कर रहे थे। सौदा तय होने के निकट ही था। तब तक उनकी दृष्टि दुकान पर खड़े एक भिखारी पर गई। जिसकी दशा बड़ी शोचनीय और दयनीय थी। वह फ्रांसिस की ओर ऐसे देख रहा था जैसे कुछ कहना चाहता है। फ्रांसिस का हृदय भिखारी से बात करने और उसका कथन सुनने के लिए उत्सुक हो उठा। लेकिन इतने बड़े ग्राहक को छोड़ कर दुकान के द्वार तक जायें कैसे, यदि ग्राहक को छोड़ कर भिखारी की ओर उन्मुख होते हैं तो अभ्यागत के प्रति अशिष्टता होती हैं। सौदे में खलल पड़ता है। और यदि भिखारी की उपेक्षा करते हैं तो परमार्थ भाव पर स्वार्थ की विजय हुई जाती है, मानवता का तिरस्कार हुआ जाता है। वे बड़े असमंजस में पड़ गए। सौदे की बात-चीत से जी उचट गया। किन्तु अपने को तुरन्त सन्तुलित कर उसका हल निकाला—ग्राहक से विनम्रता पूर्वक बोले, "महोदय ! यदि आप बुरा न मानें और अनुमति दें तो बाहर खड़े उस दयनीय मनुष्य से जाकर मालूम करलूँ कि वह क्या चाहता है ? क्योंकि यदि वह खड़ा रह कर चला गया तो उसकी निराशा उसे उतना कष्ट न देगी जितना कि मुझे।"

ग्राहक बड़े अचम्भे से भिखारी की ओर देख कर फ्रांसिस की ओर देखता हुआ यह सोचने लगा कि यह नौजवान भी अजीब है ? हजारों के सौदे से उचट कर इसका ध्यान एक नगण्य भिखारी की ओर चला गया। ग्राहक को क्या पता था कि फ्रांसिस का सन्त-हृदय और उन्नत दृष्टिकोण मनुष्यों के बीच गरीब-अमीर का भेद नहीं मानता। उपेक्षा की जो पीड़ा एक धनवान को होती है वह एक निर्धन को भी हो सकती है। उनके विचार में यह भी हिंसा का ही एक रूप था, जिसे वे मनुष्य के लिए वर्जित मानते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी बीच, जब तक ग्राहक कोई उत्तर दे और फ्रांसिस उठ कर बाहर जाय---भिखारी जा चुका था। फ्रांसिस की नजर उधर गई और वह मानव मूर्ति दिखाई न दी। वे बिल्कुल हो उठे। ग्राहक के प्रति शिष्टाचार अदा हो चुका था। अब रह गया था केवल स्वार्थ परमार्थ के सम्मुख जिसका मूल्य, फ्रांसिस की दृष्टि में हेय था। सौदागर से---"माफ करियेगा"---कह कर वे बाहर दौड़ गये। वह निर्धन बूढ़ा कहाँ किधर गया ? कहाँ खोजूँ कहाँ पाऊँ---की व्यस्तता में फ्रांसिस को दुकान, सौदा और सोदागर की याद ही नहीं रही। याद आई भी, बहुत देर बाद तब, जब वह भिखारी मिल गया वे आदर पूर्वक उसे दूकान पर लाये, उसके तन पेट की जरूरत पूरी कर देने के बाद जब आश्वस्त हुए, तब विश्राम पूर्वक बैठे और ग्राहक से हँसते हुए बोले---'क्या बतलाऊँ---आपको बड़ा कष्ट हुआ---मेरा हृदय ही कुछ ऐसा है कि मैं किसी गरीब और आवश्यकता ग्रस्त की उपेक्षा नहीं कर सकता।" ग्राहक फ्रांसिस की महानता के प्रति विनम्र होकर बोला--" पता लगाना युवक, तुम्हारे हृदय में शायद कोई सन्त जाग रहा है।" सौदा पूरा हो गया ग्राहक चला गया। किन्तु उसके यह शब्द फ्रांसिस के मस्तिष्क में गूँजते रहे--"पता लगाना, युवक, तुम्हारे हृदय में शायद कोई सन्त जाग रहा हैं। फ्रांसिस का तन, मन एक अनिवर्चनीय अनुभूति से रोमांचित हो गया और वे मन ही मन कह उठे, "मेरे ऐसे भाग्य कहाँ ?"

वहीं, दूसरी ओर ठीक इसके विरोधी कर्त्तव्य में उनकी कठोरता किस सीमा तक पहुँच जाती है।---छोटे-छोटे नगर-राज्यों में विभाजित तत्कालीन इटली के पारूजिया नामक राज्य ने उनकी जन्म-भूमि पर आक्रमण कर दिया। नवनीत की तरह कोमल फ्रांसिस फौलाद की तरह कठोर हो उठे। लोगों ने देखा कि एक बीस साल का सजीला नौजवान हाथ में नंगी तलवार लिये और घोड़े की पीठ पर सवार लोगों को शत्रु के विरुद्ध युद्ध के लिये प्रेरित करता घूमता है। उसकी आँखों से रोष की लालिमा और मुख से अङ्गार निकल रहे थे। वह कह रहा था---"मातृ-भूमि के बहादुरो उठो---शत्रु ने अपनी पवित्र भूमि पर पैर रखने की कोशिश की हैं। आबाल वृद्ध नर-नारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उठो और दुश्मन को बतला दो कि असीसी में जब तक एक भी प्राणी शेष रहेगा तब देश की स्वाधीनता पर आंच न आने देंगे। आज बलिदान का पर्व उपस्थित हुआ है शत्रुओं से डट कर लोहा लो। जितने आये हैं उनमें से एक भी आततायी बच कर जाने पावे।" यह सजीला नौजवान फ्रांसिस ही तो थे।

उन्होंने केवल दूसरों को ही युद्ध के लिये प्रेरित नहीं किया बल्कि अपने बीस साथियों लेकर सबसे आगे बढ़ कर दुश्मन से जूझ पड़े। फ्रांसिस की प्रचण्डता और उनकी तलवार का रङ्ग देख कर यह अनुमान करा सकना असम्भव था कि वे ही फ्रांसिस हो सकते हैं जिनके हृदय की करुणा किसी को निराश देख कर द्रवित न होने को भी हिंसा मानती है।

तथापि, एक वीर योद्धा के सारे गुण होने पर भी फ्रांसिस ने स्वभाव से न तो युद्ध को कभी पसन्द किया और न उसका समर्थन। उन्हें, विनाश का मूल हेतु, अपने देश का यह विभाजन और फूट बड़ा कष्ट देती थी। उनकी कामना थी कि इटली के सारे राज्य एक विश्वास और एक भावना के सूत्र में बँध कर अजेय राष्ट्र के रूप में विकास करें। एक विधान और एक निशान के अन्तर्गत सभी राज्य संगठित होकर संसार पारस्परिक प्रेम और सहानुभूति की शिक्षा दें। अपनी इस सद्भावना का प्रसार करने के लिए वे जो कुछ कर सकते थे किया भी।

दुर्भाग्य से असीसी और सिसली के बीच जब युद्ध छिड़ा तो कर्त्तव्य के नाते उन्होंने उसमें भाग तो अवश्य लिया किन्तु अब की वे इस चिन्ता से मुक्त न हो सके कि आये दिन का यह गृह युद्ध राष्ट्र को मिटा कर रख देगा। जो लोग, युद्ध का अन्त करने के लिये एक अन्तिम युद्ध"—के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं वे भयानक भूल में हैं। आग आग से नहीं-पानी से ठण्डी होती है। युद्ध से एक दूसरे युद्ध का जन्म लेना अनिवार्य प्रक्रिया है। कोई भी युद्ध अन्तिम युद्ध नहीं हो सकता। युद्ध का उपचार युद्ध नहीं बल्कि प्रेम और सद्भावना है, स्वार्थ का अन्त और परमार्थ का प्रसार है।

इस युद्ध से फ्रांसिस को चिन्ता इतनी बढ़ गई कि बीमार पड़ गये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और लम्बे समय के बाद जब वे पुनः स्वस्थ हुए तो उन्होंने संकल्प कर लिया कि अब वे सारा जीवन देश वासियों के बीच प्रेम और सद्भावना का प्रसार करने में लगा देंगे। संसार मे करुणा, दया और उदारता के बीज बोयेगे। केवल युद्ध ही नहीं दुःख, गरीबी और आधि-व्याधि से अस्त-व्यस्त मानवता को त्राण दिलाने का प्रयत्न करेंगे। इसके लिये उन्हें जो भी साधना, तप, त्याग और बलिदान करना होगा करेंगे, जो भी कष्ट उठाने पड़ेंगे खुसी से उठायेंगे। आगे चल कर उन्होंने जीवन भर इसी लोक कल्याण के लिए साधना और प्रचार किया भी। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन महात्मा ईसा के दया, क्षमा, प्रेम और मैत्री के संदेशों को पुनः स्थापित करने में लगा दिया।

फ्रांसिस अब पहले की अपेक्षा कहीं अधिक चिन्तन शील हो गये थे। वे जब तब संत डेमियन के एकान्त गिरजा घर में जा कर बैठ जाते थे और घन्टों मानव कल्याण के लिये सोचते और परमात्मा से प्रार्थना किया करते थे। उस एकान्त चिन्तन और प्रार्थना के फल स्वरूप इन्हें जो भी नया विचार और नई भावना मिलती थी उसको जनता के बीच आकर कार्य रूप में मूर्तिमान करते थे। उन्होंने कभी भी किसी उपलब्ध आध्यात्मिक विधि को अपने सुख और सन्तोष के लिए बचा कर नहीं रक्खा। वे कहा करते थे कि जो संत अथवा महात्मा अपनी साधना के फल समाज को न देकर अपने लिए सुरक्षित कर लेता है वह भौतिक चोर न सही, आध्यात्मिक चोर अवश्य है।

सन्त डेमियन का गिरजा घर उजाड़ हो चुका था। मन्दिर के नाम पर अब उसका खण्डहर ही शेष रह गया था। एक दिन फ्रांसिस का ध्यान उसकी ओर गया और वे सोचने लगे। आखिर यह भी एक सन्त का स्थापित किया हुआ भगवान् का एक मन्दिर ही है। इसमें बैठ कर मैंने बहुत से आध्यात्मिक विचार पाये हैं। क्या मेरा कर्त्तव्य नहीं है कि इसके जीर्णोद्धार का प्रयत्न करूँ? इसका पुनर्निर्माण हो जाने पर अवश्य ही आस-पास की जनता वहाँ आकर सत्सङ्ग और प्रभुभरण करने लगेगी। जन साधारण को थोड़ी देर के लिए भी उपासना में लगा सकना उनकी एक बड़ी सेवा होगी। इससे निश्चय ही उनकी नैतिकता का विकास होगा उनकी धर्म भावना बढ़ेगी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बहुत से पापों से बच जायेंगे। किसी की आत्मा को पवित्र बनाने में सहायक होने से बढ़ कर जन-सेवा क्या हो सकती है ?

विचार दृढ़ होते ही वे उसे मूर्तिमान करने में लग गये। घर में एक लम्बा चौड़ा रोजगार था। पैसे की कमी न थी। उन्होंने एक साथ बहुत-सा कपड़ा बेच डाला और गिरजाघर के जीर्णोद्धार के लिए पैसा जमा कर लिया। यह बात उनके पिता को बहुत ना पसन्द आई। उन्होंने उनकी भर्त्सना करते हुए कहा—फ्रांसिस ! तुमने यह काम ठीक नहीं किया। इस प्रकार मेरा माल बेच कर उसका पैसा फिजूल खर्ची के लिए रख लेने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। उस पुराने गिरजा घर की मरम्मत कराना मैं जरा भी जरूरी नहीं समझता। तुम हमारा सब रुपया अभी वापिस कर दो। फ्रांसिस ने बहुत कोशिश की कि वे पिता को अपनी परमार्थ भावना और गिरजाघर के जीर्णोद्धार की आवश्यकता समझा सकें। किन्तु पिता की अनुदारता के कारण वे सफल न हो सके। बल्कि उसके बदले में सुनना पड़ा कि—"यदि मेरा सारा रुपया सीधी तरह से नहीं दे दोगे तो मैं न्यायालय में तुम्हारे विरुद्ध प्रसंग प्रस्तुत करूंगा।"

पिता की बातें सुनकर फ्रांसिस को अपार दुःख हुआ। उन्होंने तुरन्त ही सब रुपया वापिस कर दिया और कहा—धिक्कार है ऐसे धन को जो पिता को उनके विरुद्ध अभियोग की प्रेरणा दे सकता है। जो धन पुण्य परमार्थ के काम न आकर यों ही पड़ा प्रदर्शनीय बना रहता है उसे पाप के हेतु से अधिक कुछ नहीं माना जा सकता। आज मुझे महात्माओं के इस कथन में पूर्ण विश्वास हो गया कि लोभ की परिधि में बन्दी धन एक दिन उसके रखवाले को सर्प बन कर डस लेता है। जो धन मनुष्य को इस सीमा तक गिरा सकता है उसे मैं आज से नमस्कार करता हूँ। और आप की सम्पति में अपने उत्तराधिकार को तिलांजलि देता हूँ। अब मुझे न आज आपका धन चाहिए और न कभी भविष्य में चहिए होगा। जन कल्याण की भावना से बनने वाला गिरजाघर जनता के धन से बनेगा। उसके लिये मैं जन-जन के आगे हाथ फैला कर याचना करूंगा। इतना कह कर फ्रांसिस ने अपने कीमती कपड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उतार कर रख दिये और एक साधारण चोगे के साथ दो एक वस्त्र लेकर चले गये।

फ्रांसिस के पास अब उनका शरीर, उनका धर्म, उनकी भावनायें और ईश्वर रह गया था। इसके अतिरिक्त न उनके पास घर वार था और न जीविका के साधन। तथापि उन्होंने उनकी रंच मात्र चिन्ता न की। उन्हें विश्वास था कि समाज की सेवा में निःस्वार्थ भाव से सब कुछ उत्सर्ग कर देने पर मनुष्य का स्थान समाज के हृदय में बन जाता है। वह समाज के हित की चिन्ता करता है और समाज उसकी सारी चिन्ताएँ अपने ऊपर ले लेता हैं। हुआ भी ऐसा ही। जल्दी ही समाज ने जब फ्राँसिस की भावनाएँ समझ ली उन्हें हाथों-हाथ उठा लिया। वे केवल फ्रांसिस से महात्मा फ्रांसिस बन गये।

घर से बाहर आकर महात्मा फ्रांसिस को न अपनी चिन्ता हुई और न अपनी भूख-प्यास की। उन्हें चिन्ता हुई तो गिरजाघर की मरम्मत की। उन्होंने सोचा तो क्या मैं, गिरजाघर की मरम्मत के लिये घर-घर जा कर पैसे की याचना करूँ। किन्तु पैसा माँगना उन्हें उचित न लगा: जिस पैसे की बुराई वे अभी-अभी देख कर आये थे, उसका संचय करने के लिये उनकी आत्मा ने स्वीकृति नहीं दी। तो फिर आखिर टूटे-फूटे गिरजाघर का जीर्णोद्धार किस प्रकार हो? वे इस समस्या पर निरन्तर विचार करते रहे। उन्हें दिन-रात सोते-जागते हर समय यही एक चिन्ता रहती थी।

विचार क्रिया में समस्या का हल निकालने की एक स्वाभाविक शक्ति ही है। विचार धारा चलते-चलते एक दिन गन्तव्य पर पहुँच ही जाती है। जब जितना अच्छा मन्तव्य होता है उतना ही अच्छा और उतनी ही जल्दी मार्ग निकल आता है। हल तो किसी ऐसी समस्या का निकालने में विलम्ब एवं कठिनाई होती है जिसका उद्देश्य अशुभ अथवा स्वार्थ पूर्ण होता है। ऐसी दशा में समस्या दोहरी होकर जटिल हो जाती है। मलिनाशयी व्यक्ति को अपने स्वार्थ की रक्षा और लोक भय की भी चिन्ता करनी होती है। इसी लिये ही विद्वानों का अभिमत है कि अपने विचारों एवं कार्यों को सीधा, सरल और निष्कलंक रक्खो। दुमुखी मन्तव्यों में लोक-परलोक दोनों का भय निवास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करता है । सीधे, सरल और सच्चे रह कर कितना बड़ा कोई भी काम हाथ में लिया और निरापद रूप से किया जा सकता है ।

महात्मा फ्रांसिस ने जल्दी ही हल सोच निकाला इस समय शुरू से ही विकसित की हुई, उनकी परिश्रमी वृत्ति ने बड़ी सहायता की । गुणों की महिमा इसीलिये बखानी गई है कि वे मनुष्य के बड़े ही सच्चे और सार्वकालिक मित्र होते हैं । एक तो यों ही गुणी व्यक्ति को हर ओर आदर, सहयोग और सहायता मिलती रहती है, दूसरे यदि संयोगवशात् एक बार सारा समाज ही उसका साथ क्यों न छोड़ दे तब भी उसके गुण उसे निराश, निरुत्साह अथवा निस्साहस नहीं होने देते । गुणों के आधार पर मनुष्य जल्दी ही अपना स्थान फिर बना लेता है ।

याचना करने के स्थान पर महात्मा फ्रांसिस ने, गिरजाघर के लिये स्वयं परिश्रम करने की सोची । उनके लिये उन्होंने दो मार्ग चुने । एक तो यह कि वे जिन-जिन स्थानों पर निर्माण कार्य हो रहे होते थे वहाँ जाकर अन्य श्रमिकों की तरह मजदूरी करते थे । दूसरे यह कि छुट्टी के बाद से बड़ी देर रात तक वे एक तारे पर गली-गली भजन गाते घूमते थे । जिनका विषय भगवद् भक्ति के साथ समाज-सेवा, समाज कल्याण और धर्म कार्यों की प्रेरणा होता था ।

किन्तु महात्मा फ्रांसिस तो बड़े विलक्षण मजदूर थे । मजदूरी लेने के समय जब अन्य मजदूर पैसे लेते थे तब वे मालिक से प्रार्थना करते थे कि मजदूरी के एवज में उन्हें पैसे नहीं बल्कि ईंटें दे दी जायें । भजन-गायन के उपलक्ष में भी वे केवल एक घर से थोड़ा सा भोजन ले लेते थे, बाकी सारे दाताओं से यही प्रार्थना करते थे कि यदि वे उन्हें कुछ देने की कृपा करना चाहते हैं तो भोजन वस्त्र अथवा पैसा देने के बजाय ईंटें दें ।

भोजन के सम्बन्ध में भी महात्मा फ्रांसिस का रवैय्या अजीब ही था । जिस द्वार पर वे भोजन स्वीकार करते थे उसकी गृहणी से पहले दो तीन प्रश्नों का उत्तर लेकर सन्तुष्ट हो लेते थे । वे प्रश्न इस प्रकार के होते थे । माता ! क्या आपके पास पुत्र को आजीविका की सिद्धि सरलता पूर्वक हो जाती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है ? जो भोजन आप मुझे दे रही हैं । वह बचा हुआ बासी ही तो है, आज का ताजा तो नहीं है ? घर के सभी, बालक, वृद्ध और स्त्री-पुरुष, सदस्य अच्छी प्रकार से खा चुके हैं ? किन्हीं बच्चों, अश्यागतों अथवा दूसरे समय के लिए रखे आवश्यक भोजन का भाग तो मेरे लिये नहीं लाई हैं ? लाया गया भोजन यदि इन माप दण्ड से अलग होता था तो वे स्वीकार नहीं करते थे और यह कह कर चले जाते थे—रु'माता मैं तो गृहस्थों के भोग्य, प्रसाद का ही अधिकारी हूँ । अब फिर किसी भूसरे दिन आऊँगा तो मुछे मेरा वाँछित भोजन भाग दीजिएगा ।' गृहणियाँ उस तरुण तपस्वी की सूरत देखती और करुणा से आँखें गीली कर लेती श्रद्धा से सुखी हो जाती । प्रायः सभी घरों में बचे हुए बासी भोजन की एक प्रथा सी चल पड़ी ।

मालिकों से लेकर मजदूरों तक को, मजदूरी के रूप में इंटें लेने वाले विचित्र मजदूर के प्रति बड़ी जिज्ञासा होने लगी । आखिर यह पैसा न लेकर ईंटें क्यों लेता है ? उन ईंटों को ले कहाँ जाता है और करना क्या हैं ? शायद मस्तिष्क में कुछ विकार है ? लेकिन ऐसा भी मालूम नहीं होता । सारी बातें ठीक करता है, और काम तो सबसे ज्यादा और सबसे अच्छा करता है ? काम के बाद भी किसी सनक के चिन्ह दिखलाई नहीं देते। तब आखिर यह रहस्यमय आदमी कौन है और इसका रहस्य क्या है ?

लोगों ने उस समय महात्मा फ्रांसिस का पीछा किया जिस समय वे सिर पर ईंटें ढो-ढो कर ले जाते थे । कोई विशेष बात नहीं थी । लोगों ने देखा कि वह विलक्षण मजदूर ईंटें ले जा कर संत डेमियन के टूटे-फूटे गिरजा-घर में जमा करता है और उनको देख कर कह उठता है—अभी काफी नहीं हैं, थोड़ी सो कमी है ।" लोगों ने यह भी जाना कि वह वहीं रहता भी है और कुछ पूजा उपासना भो करता है । अब तो लोग उसका परिचय और उस परिश्रम का उद्देश्य जानने के लिए और उत्सुक हो उठे ।

धीरे-धीरे संध्या के समय महात्मा फ्रांसिस के पास लोग आने और बैठने लगे । बात-चीत के सिलसिले में लोगों ने पूछ ही तो लिया । महात्मा फ्रांसिस ने बतलाया—'मैं कौन हूँ—इसका छोटा सा उत्तर यह है—कि मैं एक साधा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रण मनुष्य हूं और मनुष्यों की सेवा मेरे जीवन का उद्देश्य है। ईंटें इसलिए जमा करता हूं कि पूरी हो जाने के बाद भगवान के इस मन्दिर की मरम्मत करूँगा। बस, इससे अधिक मेरा न तो कोई परिचय है और न रहस्य।"

महात्मा फ्रांसिस की उन साधारण बातों के पीछे जो महानता छिपी हुई थी सभी ने उसे जाना और स्वीकार किया। अब तो मजदूर उनकी ईंटें ढोने का अनुरोध करने लगे। किन्तु महात्मा फ्रांसिस ने किसी को कष्ट न दिया——हँस कर कह दिया—जब मजदूर को भी मजदूर की जरूरत होने लगेगी तब तो इस दुनियाँ का काम चल चुका। किन्तु इन सरलताओं और सूक्तियों से महात्माओं का बचाव कब होता है। जनता को तो हर समय उनकी जरूरत रहती है। लोगों को ठीक से किसी महात्मा का पता चल भर जाये, फिर वह सेवा से बचने का कितना भी प्रयत्न क्यों न करे, बच नहीं पाते। जान कर भी, महात्मा की सेवा का पुण्य भला कोई किस शील-संकोच में छोड़ देगा, फिर ऐसे महात्मा की सेवा जिसकी साधना स्वयं ही जनता की सेवा हो। महात्मा को उससे क्या हानि-लाभ होता है यह तो वह जाने जनता तो, उनकी सेवा में हित देख कर उसका सम्पादन तो करेगी ही। इस प्रसंग में वह स्वार्थ के अपवाद से भी नहीं डरती। बहुत कुछ नाही-नाहीं करने पर भी लोग आखिर उनकी सेवा, सहायता में लग ही गये। किसी ने उनकी एक न सुनी।

महात्मा फ्रांसिस की लोग प्रियता बढ़ती गई और जल्दी ही वे नगर में ही नहीं बाहर भी दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गये। अब तो वे दिन-रात जन समुदाय से घिरे रहने लगे। लोग योजनायें पूछते और तन, मन, धन से पूरी करने में जुट जाते। उनके मनोनीत गिरजाघर का जीर्णोद्धार हो गया। योजना आगे बढ़ी और दूसरे गिरजाघरों की मरम्मत होने लगी। योजनायें चलती रहीं—गिरजाघर सुधरते रहे यहाँ तक कि ऐसा कोई भी गिरजाघर शेष न रहा जिसमें नवीनता का समावेश न हो गया हो। उसके बाद लोगों ने पूछा—"महात्मन्! अब आगे?,

महात्मा फ्रांसिस ने बतलाया—'केवल गिर्जाघरों के बन जाने अथवा सज जाने से उनका उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। उनका उद्देश्य तब पूरा होता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नव उनके मन्दिर सत्सङ्ग, कथा-वार्ता, स्तुति-गान और प्रार्थनाओं से मुखर होते रहें। उनका उद्देश्य तब पूरा होता है कि उनकी प्रेरणा से सच्चे धर्म का प्रचार एवं प्रसार हो। नये-नये लोग, निर्मित होकर उनके द्वारों से निकलें और संसार में फैल कर लोगों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें। उनका उद्देश्य तब पूरा होता है जब उनमें से जन-सेवक निकल-निकल कर लोगो का दुःख दूर करने का प्रयत्न करें दीनों, दुःखियों, अनाथों एवं असहायों के सहारा बनें। भगवान् के इन मन्दिरों की सार्थकता तो तब है जब ये प्रेम, करुणा और मैत्री के स्रोत बनें और इनमें विद्यापीठों की स्थापना हो। इनके एक भाग में पुस्तकालय हो तो एक भाग में धार्मिक कक्षायें चल रही हों। सांस्कृतिक कार्यक्रम और स्वास्थ्य एवं चरित्रवर्धक गतिधियाँ ही इनकी सार्थकता के कारण बन सकते हैं।

महात्मा फ्रांसिस ने गिरजाघरों की सार्थकता के मिष से नव-निर्माण के जिस व्यापक सन्देश को प्रसारित किया उसने लोगों के जीवन में नई स्फूर्ति नव-जागरण और नया उत्साह भर दिया। जिधर देखो उधर ही धर्म के उत्थान और समाज के निर्माण के कार्यक्रम चलते दिखलाई देने लगे। महात्मा फ्रांसिस सर्वमान्य सन्देश -वाहक बन गए।

ऐसा नही कि जनता को जीवन के सही मार्ग पर लगा कर महात्मा फ्रांसिस स्वय' एक ओर बैठ कर आत्मालीन हो गए हों। वे बराबर जनता के बीच रहते और उसकी सक्रिय सेवा करते थे। वे कभी एक स्थान पर बँध कर नहीं रहते थे। एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते-जाते ही रहते थे। जहाँ पर भी सेवाओं का अवसर देखते थे वही ठहर जाते थे और अपना कर्त्तव्य पूरा कर दूसरे स्थान पर चल देते थे।

अपने पर्यटन में उन्होंने पाया कि कोढ़ियों की दशा बहुत खराब है। वह इसलिए ही नहीं कि उनका शरीर बेकार होता है। घावों में पीड़ा होती है अथवा बेचारे नित्य-क्रियायें तक पूरी कर सकने से लाचार रहते हैं। यह सब कष्ट तो उन्हें नियति की ओर से मिले ही होते हैं। इसके लिए कोई कर भी क्या सकता है, आदमी तो ज्यादा से उनकी कुछ आर्थिक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शारीरिक सहायता ही कर सकता है। इसके अतिरिक्त उनकी जो दयनीय दशा थी वह यह कि जल्दी उन्हें कोई भीख नहीं देता था। लोग देखते ही दूर से ही दुत्कार देते थे। उनके लिए बस्तियों में जाने और भीख माँगने की मना ही थी। नगर के बाहर उन्हें पड़े रहने पर विवश किया जाता था। बेचारे उधर से निकलने वालों को देख कर पेट दिखलाते और भीख के लिए रिरियाते रहते थे। लेकिन कोई भी उन पर दया नहीं करता था। हर आदमी उन्हें घृणा और तिरस्कार से देख कर मुँह फेर लेता था। इतना ही नहीं उन महा-रोगियों को सारे समय अपना पूरा शरीर कपड़े से ढके रहना पड़ता था, जिससे कि लोग उनका शरीर न देख सकें। यदि किसी आवश्यकता वश उन्हें कहीं जाना पड़ता था तो बराबर एक घण्टी बजाते रहनी पड़ती थी। वह इसलिए कि लोग जान सकें कि कोई कोढ़ी आ रहा है और उसकी छाया तक से बचने की व्यवस्था कर लें। महात्मा फ्रांसिस उन महारोगियों की उस दशा से बड़े दुःखी होते थे। उन्होंने निश्चय किया कि वे उनकी सेवा करेंगे, उनका दुःख बटायेंगे और लोगों में उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न करेंगे।

अब वे अधिकतर कोढ़ियों के बीच ही रहने लगे। वे उनको सहारा देकर नित्य-क्रियाओं में सहायता करते थे। उनके घाव अपने हाथों से धोते थे। उनके लिए दवा बनाते थे और अपने हाथ से लगाते थे। शहर में जाकर उन महा-रोगियों के लिए भोजन-वस्त्र माँग लाते थे। कभी-कभी जरूरत पड़ने पर अपने हाथ से भोजन भी देते थे। जो हाथों से बिलकुल लाचार होते थे खिलाते थे। दूसरे-तीसरे दिन उनके स्थान की सफाई करना और लगभग नित्य ही तनके वस्त्र धोना और नहलाना कभी भूलते न थे। उनके लिए स्वच्छ पानी लाना और बर्त्तनों की सफाई करने में कभी प्रमाद न करते थे।

इन सेवाओं के अतिरिक्त वे उनकी एक बड़ी और महत्त्वपूर्ण सेवा और भी करते थे। वह यह कि नित्य-प्रति उनको इकठ्ठा कर के भगवान की प्रार्थना कराया करते थे। अच्छी-अच्छी पुस्तकें और कथाएँ सुनाया करते थे। इस प्रकार उन्होंने कोढ़ियों की आत्मा का परिष्कार कर उनको एक बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बड़ी सेवा की थी। उनके इस प्रयत्न में बहुत से कोढ़ी भगवान के बड़े गहरे भक्त बन गए और उन्हें विश्वास हो गया कि किन्हीं कारणों से उनका यह लोक तो बिगड़ गया पर परलोक सुधर रहा है।

वे नगर में जाकर लोगों को कोढ़ियों के प्रति दया करने के लिये समझाते थे, सहानुभूति करने के लिये कहते थे। उनका उपदेश था कि—इन महारोगियों का शरीर देख कर घृणा मत करो। इन पर अपनी सहानुभूति-पूर्ण पारदर्शी दृष्टि डालो और उस आत्मा को देखो जो उसी तरह इनमें निवास करती है जिस तरह हम आप में। मनुष्य का पूरा अस्तित्व उसका बाह्य शरीर मात्र नहीं है। उसके अस्तित्त्व का एक भाग उसका हृदय और आत्मा भी है। मनुष्य के अस्तित्त्व का यही भाग सबसे महत्त्वपूर्ण है। वह मनुष्य सबसे बड़ा ज्ञानी है जो किसी का शरीर ही न देख कर उसका हृदय, आत्मा भी देखता है। इस प्रकार सच्चा धर्मात्मा वह है जो किसी के शरीर के आधार पर उसकी पवित्र आत्मा की उपेक्षा कर हृदय दुःखाता है। किन्हीं अज्ञात कारणों से विकृत देख कर किसी का तिरस्कार करना अथवा घृणा दिखलाना, उसकी आत्मा का हनन करना और हृदय को दुखाता है जिसे हम प्रभु ईसा के अनुयायी हिंसा का पाप मानते हैं। यदि हमारी दया, करुणा और सहानुभूति इन्ही के काम न आई तो फिर वह किसके काम आएगी? परमात्मा ने हमें जो यह दिव्य अनुभूतियाँ अनुग्रह की हैं वे इसीलिए की हैं कि किन्हीं गरीबों, दुःखियों और पीड़ितों हैं, देख कर हम उनका प्रकाशन करें, अन्यथा उनका उपयोग ही क्या जाता है?

हमें समझना चहिये कि ये महारोगी भी मनुष्य को। हमारे भाई हैं। हमारी नैतिकता तो तब सार्थक है जब हम अपने इन भाइयों के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करें। मनुष्यों के बीच किन्हीं मनुष्यों का इस प्रकार असहाय पड़ा रहना किसी प्रकार भी शोभनीय नहीं है। हम सबको चाहिये कि इन दुखियों की सहायता के लिए वह सब कुछ करें जो कर सकते है।

महात्मा फ्रांसिस के इन उद्‌गारों का लोगों पर गहरा असर पड़ा और उनके मन से कोढ़ियों के प्रति घृणा का भाव दूर हो गया। जनता ने मिल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर उनके झोपड़ियों का प्रबन्ध कर दिया। भोजन, वस्त्र और उपचार के लिए एक स्थाई निधि और सामान्य चिकित्सालय का सूत्रपात कर दिया। इस प्रकार महात्मा फ्रांसिस ने मानवों द्वारा मानवों की एक महान् सेवा सम्पादित कराई।

कोढ़ियों की सेवा की तरह महात्मा फ्रांसिस ने भिखारियों का भी कुछ कम उपकार नहीं किया। सबसे पहले उन्होंने भिखारियों के समूह से दो अलग-अलग वग बना डाले। एक वर्ग में उन्होंने ऐसे भिखारियों को रक्खा जो अपङ्ग जौर अपाहिजों थे और भिक्षा-दान के ठीक-ठीक अधिकारी थे। दूसरे वर्ग में उन्होंने उन भिखारियों को रक्खा जो अच्छे-खासे थे और आराम से मेहनत-मजदूरी कर सकते थे।

सबसे पहले उन्हों ने दूसरे वर्ग के भिखारियों को समझाया कि जब काम कर सकते हैं, मेहनत-मजदूरी कर सकते हैं तो इस प्रकार भिक्षा माँग कर खाना घोर अपमान और लज्जा की बात है। सुर-दुर्लभ मनुष्य जीवन का यह अपव्यय एक जघन्य अपराध है। इससे आँखों देखते यह लोक तो विगड़ता ही है, परलोक का भी नाश होता है। अच्छा-खासा शरीर पाकर किसी के सम्मुख भिक्षा के लिये हाथ पसारने से आत्मा का घोर अपमान होता है। ऐसा करते देख कर परमात्मा को पश्चात्ताप होता है कि उसने ऐसे निकम्मे आदमी को सर्व शक्तियों का यह भंडार- यह सुन्दर शरीर क्यों दिया है?

इसके अतिरिक्त समर्थ शरीर वाले भिखारी अधिक तत्परता और चतुराई से समाज की उदारता का शोषण कर लाते हैं और तब वे असमर्थ भिखारियों को जल्दी कुछ दे सकने में अपने को रिक्त अनुभव करते हैं। इस प्रकार भिक्षा के जो सच्चे अधिकारी हैं उनका अवसर समाप्त हो जाता है। यह अन्याय है, अत्याचार है जो किसी को नहीं करना चाहिये। समर्थ भिखारियों को चाहिये कि वे जहाँ भी सम्भव हो मेहनत, मजदूरी कर के सम्मानपूर्वक जीने का प्रयत्न करें।

इस प्रकार दूसरे वर्ग के भिखारियों को सदुपदेश देने के साथ-साथ महात्मा फ्रांसिस नागरिकों को भी बतलाते थे कि वे अपनी उदारता अपव्यय न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करें। हर भिखारी भिक्षा का अधिकारी नहीं होता। वे जब भी कुछ दें ऐसे भिक्षुक को दें जो वास्तव में अपङ्ग, असमर्थ और सहायता के योग्य हो। इसके अतिरिक्त उन्होने समर्थ भिक्षुओं के लिए यथासम्भव काम के अवसर खोजने में सहायता की और नागरिकों से उन्हें काम देने की अपील भी की। यह कार्य क्रम उनका लगभग प्रति दिन ही चलता रहता था जिससे भिक्षा जीवियों को बड़ी राहत मिली।

महात्मा फ्रांसिस के बहुत से अनुयाई हो गये थे और उन्हें किसी बात की कमी नहीं रह गई थी, अपनी रोटी का क्रम वे पूर्ववत् ही चलाते रहे। पर उसमें थोड़ा परिवर्तन अवश्य कर दिया था। वह यह कि पहले जहाँ वे भजन गाकर रोटी पा लेते थे वहाँ अब काम कर के भोजन लेते थे। वे किसी एक घर चले जाते थे और उसका कोई न कोई काम कर के रोटी ले आते थे। इन कामों में पानी भरने से लेकर बर्तन माँजने और झाड़ू लगाने तक के काम शामिल होते थे। बहुत से लोग प्रार्थना करते थे कि महात्मन् ! कुछ देर आकर मेरे घर भोजन कर जाया करें, पर महात्मा फ्रांसिस इसके लिए तैयार न होते थे। उनका कहना था कि रोटी पाने का सच्चा अधिकारी वही है जो बदले में कुछ ठोस कार्य करे। परमात्मा का दिया ज्ञान तो जनता में निःशुल्क ही वितरित होना चाहिए। वह तो जनता की ही सम्पति होती है जो वितरित करने के लिऐ निसर्ग को और किसी को धरोहर के रूप में दी जाती है। उसके आधार पर कुछ पाने की चेष्ट करना अनाधिकार चेष्टा है, जो किसी भी विचार के लिए शोचनीय नहीं है। रोटी के लिए मुझे कुछ काम करना ही है और काम कर के ही मुझे अपने मुट्ठी-भर अन्न पाना है।

भिखारियों, कोढ़ियों और गरीबों की तरह महात्मा फ्रांसिस की सहानुभूति अपराधियों के प्रति भी कुछ कम न थी। वे अपराधियों को भी दया और करुणा की दृष्टि से देखा करते थे। "कोई मनुष्म जन्म-जात अपराधी नही होता, और न वह अपराध प्रवृत्ति ले कर ही पैदा होता है। ईश्वर की ऐसी इच्छा कभी नहीं हो सकती कि उनका उत्पन्न किया हुआ कोई मनुष्य अपराधी और संसार में कष्ट, क्लेशों की वृद्धिकरे। उनकी स्वाभाविक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इच्छा तो यही होती है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति गुणी और सुशील बने। स्वयं सुख और शांति पूर्वक तो रहे ही, अपने विचारों और कार्यों द्वारा दूसरों के सुख में भी सहायक हो। समाज के कतिपय व्यवहार दोष ही मनुष्य को अपराध की ओर मोड़ देते हैं। भूल किससे नहीं होती ? प्रायः सभी से भूल होती रहती हैं। मनुष्य सर्वथा पूर्ण नहीं है। पूर्ण और निर्दोष तो एक परमात्मा ही है। मनुष्य की अपूर्णता उससे कभी कोई भूल करा सकती है। इससे समाज के किन्हीं अन्य लोगों को असुख अथवा सुविधा हो सकती है। उन्हें बुरा भी लग सकता है और नाराजगी भी हो सकती है। लेकिन उचित यह है कि, जिससे भूल बन पड़ी है उसे समझाया जाए। लेकिन लोग मोहवश प्रायः प्रतिशोध का व्यवहार करने लगते हैं। गलती का उत्तर गलती से देते हैं। इससे क्रिया-प्रतिक्रिया की परम्परा चल पड़ती है और अपराध-प्रति अपराध होने लगते हैं। सुधार होने के बजाय सामान्य दोषी एक पक्का अपराधी बन कर समाज को त्रस्त करने लगता है।

"अपराधी के प्रति प्रतिशोध की नहीं, सहानुभूति की भावना रखनी चाहिए। इस सृजन-भावना से अपराधी पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा और भविष्य के लिए वह सुधार का प्रयत्न करेगा। सहानुभूति की यह मङ्गल भावना कोई कठिन प्रयत्न नहीं है। केवल एक बार क्षमा कर देने भर से यह भावना आप से आप उत्पन्न हो जाएगी। इसलिए तो महात्माओं के निकट जाकर अपराधियों की प्रवृत्ति बदल जाती है और वे सज्जन बन जाते हैं। इसी क्षमा-शक्ति के बल पर ही सत्पुरुष सब जगह निर्द्वन्द ओर निर्भय होकर विचरण करते रहते हैं। उन्हें कहीं भी किसी प्रकार का भय नहीं रहता।"

वे एक ओर नारियों को, अपराधियों को क्षमा करने, उनके प्रति दया और सहानुभूति रखने की प्रेरणा देते थे और दूसरी ओर अपराधियों के बीच जाकर उन्हें सुधार के लिए प्रेरित करते थे। वे उन्हें सुन्दर-सुन्दर उपदेश देते और सदाचरण की महिमा बतलाते थे। सत्सङ्ग, सेवा और सन्तोष के द्वारा शिवत्व की प्रति के उपाय बतलाते थे। वे उन्हें, उनके उन कष्टों, दुःखों और भयों का स्मरण भी कराते थे जिनके कारण अपराधियों को न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शांति प्राप्त होती थी और न सन्तोष । इस प्रकार उभयमुखी प्रयत्नों से महात्मा फ्रांसिस अपराधियों के सुधार में एक उल्लेखनीय सीमा तक सफल हो सके थे ।

महात्मा फ्रांसिस जिस प्रकार का उपदेश दूसरों को देते थे उसको अपने आचरण में मूर्तिमान भी करते थे । एक बार कुछ डाकुओं ने उनके निवास पर धावा किया । लेकिन उनके चारों ओर के सजग स्वयम् सेवकों ने कड़े प्रतिरोध द्वारा उन्हें भगादिया । महात्मा फ्रांसिस को जब पता चला तो उन्होंने स्वयम् सेवकों के इस व्यवहार पर बड़ा दुःख मनाया और कहा—यह आप लोगों ने ठीक नहीं किया । यदि एक बार यहाँ आ जाते तो उनका भ्रम दूर हो जाता । वे जान जाते कि यहाँ मेरे पास सेवा और सद्विचारों के सिवाय और कोई सम्पत्ति नहीं है । प्रतिरोध से तो उनका भ्रम और भी बढ़ गया होगा । इतना कह उन्होंने डाकुओं के पास प्रेम, सहानुभूति और क्षमा-याचना का सन्देश और साथ में अपने लिये बनाई रखी रोटियाँ भेजीं । डाकुओं को जब महात्मा फ्रांसिस की महानता का पता चला तो उन्हें अपने किये का बड़ा पश्चात्ताप हुआ और वे दौड़ते-दौड़ते उनके पास आए और पैरों पर पड़ कर क्षमा-याचना करने लगे । महात्मा फ्रांसिस ने उन्हें क्षमा ही प्रदान नहीं की बल्कि हृदय का पवित्र प्रेम भी दिया । महात्मा के इस व्यवहार ने डाकुओं का जीवन ही बदल दिया । उसके बाद वे डाकू बड़े शिष्ट और सभ्य नागरिक बन गए । सच्ची सद्भावना में बड़ी शक्ति होती है ।

इसी प्रकार एक बार जब वे अपराधियों को अपना सुधार करने के लिए उपदेश कर रहे थे तो कई एक डाकू उनसे बड़े क्रुद्ध हो गए । उन्हें अपनी उद्दीप्त अपराध-वृत्ति के कारण उनका वह उपदेश अच्छा नहीं लगा और उन्होंने इनके कथन को अपने विरुद्ध प्रचार समझा । वे उन्हें मारने की घात में रहने लगे । एक दिन जब महात्मा फ्रांसिस अपने स्वभाव के अनुसार जङ्गल की ओर प्रकृति-पर्यटन के लिए गये तो उन डाकुओं को अवसर मिल गया उन्होंने उनको पकड़ कर खूब मारा-पीटा और अन्त में पानी बरफीले भरे से एक गहरे गड्ढे में ढकेल दिया । किन्तु अपनी धुन के पक्के महात्मा फ्रांसिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

डाकुओं से मार खाते और शांति पूर्वक मुस्काते हुए उन्हें उपदेश ही देते रहे इतना ही नहीं उनके द्वारा गड्ढे में ढकेले जाने के बाद भी वे उसमें शांति पूर्वक पड़े-पड़े ईश्वर की लीला पर हँसते और उसके गुण गाते रहे। कभी तो प्रसन्न होकर भजन गाते थे तो कभी करुण होकर डाकुओं को क्षमा कर देने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते थे। इस प्रकार वे बरफ और पानी से भरे गड्ढे में कई दिन तक पड़े रहे। वहाँ से निकल सकने को कोई सुभीता ही न था। संयोगश वे ही डाकु उधर से फिर निकले और इस आशा से उस गड्ढे में झाँक कर देखा कि अब तो वह फकीर मर गया होगा। किन्तु उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह मुक्त पुरुष आनन्द पूर्वक उस गड्ढे में पड़ा-पड़ा ईश्वर के गुण गा रहा है और उन्हें क्षमा कर देने के लिए बार बार प्रार्थना कर रहा है। महात्मा फ्रांसिस की यह महानता देख कर डाकुओं का हृदय परिवर्तन हो गया। उन्होंने महात्मा फ्रांसिस में प्रभू ईसा की छाया देखी। आदर पूर्वक उन्हें बाहर निकाला परों पर गिर कर क्षमा माँगी और उनके अनन्य भक्त बन गए।

महात्मा फ्रांसिस के अनुयाइयों की सख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी। लोगों ने उनसे प्रार्थना की कि वे एक संघ बनाऐं और नियमित रूप से अपने नये सेवा धर्म का प्रचार करें। किन्तु वे इसके लिए तैयार न हुए। उन्होंने कहा—मैं कोई धर्म प्रवर्त्तक नहीं हूँ। मैं तो धर्म-सुधार का कार्य करने वाला एक साधारण जन-सेवक हूँ। प्रभु ईसा का दिया हुआ मानव-धर्म हमारे सबके सामने मौजूद है ऐसी अवस्था में किसी नये धर्म का प्रवर्त्तन करना अनुचित हैं। हम सबका यही परम धर्म है कि हम उनके सिद्धाँन्तो को मानें और उन्हीं के अनुसार अपने आचरण को ढालें। धर्म में जो विकृत्तियाँ आ गई हैं दूर करने के लिये प्रयत्न करें। भूली-भटकी जनता को ठीक मार्ग पर लायें।

उन्होंने अपने अनुयाइयों को टोलिया बनाई और उनको यत्र-तत्र धर्म प्रचार तथा सुधार के लिये भेजने लगे। वे स्वयं भी किसी न किसी टोली के साथ जाया करते थे। एक दिन वे यों ही धर्म प्रचार करते घूम रहे थे कि सहसा उनकी दृष्टि एक बूढ़े पर पड़ी। वह बहुत कमजोर और गरीब था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिर पर लकड़ियों का एक गट्ठर लिए बाजार में बेचने के लिये जा रहा था। वह बोझ लादे लाठी के सहारे बड़ी कठिनता से धीरे-धीरे चल रहा था। महात्मा फ्रांसिस ने उसे देखा तो रह न सके वे तुरन्त उस बूढ़े के पास गए और उसका बोझ अपने कन्धे पर रख कर गन्तव्य तक पहुँचा आए। उनको अनुयायियों में से बहुतों ने चाहा कि बोझ उनके कन्धों पर रख दिया जाए। पर वे इसके लिए तयार न हुए। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि पुण्य, परमार्थ और सेवा का जो अवसर उनको मिला हैं वे उसमें किसी को भागीदार नहीं बनायेगे। लोग अपने लिए राह चलते इस प्रकार के अवसर खोजें और पुण्य लाभ करे। संसार में सेवा करने के अवसर कदम-कदम पर मिल सकते हैं। उनकी यह सिद्धन्त निष्ठा देख कर लोग निहाल हो गए और श्रद्धा से अवनत भी।

एक बार उन्हें रास्ते में एक ऐसा आदमी मिला जो बहुत गरीब था। उसके तन पर वस्त्र तक न थे और सरदी से काँप रहा था। महात्मा फ्रांसिस तुरन्त उसके पास गए और अपना चोगा उतार कर उसे पहना दिया। जब उस आदमी ने उन्हें धन्यवाद दिया तो उन्होंने आदर पूर्वक कहा—"बाबा इसमें धन्यवाद की क्या बात है? इस चोगे पर मेरा कोई अधिकार नहीं था। यह तो मेरे पास तक के लिए केवल ऋण रूप में था जब तक मुझे अपने से गरीब आदमी नहीं मिला। आज आप मिल गए और मैंने अपना ऋण उतार दिया।" वह आदमी आनन्द से गद्‌गद् हो उठा और बोला—आपने वस्त्र देकर जाड़े से केवल मेरी जान ही नहीं बचाई, ज्ञान का प्रकाश भी दिया हैं। मैं भी आपका यह चोगा ऋण के रूप में अपने पास मानूँगा और जब भी कोई अधिक आवश्यकता- ग्रस्त मिलेगा उतार कर उसे दे दूँगा।

महात्मा फ्रांसिस में दया का जो भाव बचपन से ही चला आ रहा था वह अब जन-सेवा के प्रसाद से पराकाष्ठा तक पहुँच कर आध्यात्मिक आनन्द बन गया था। उनकी यह दया करुणा अब मानवों तक ही सीमित नहीं रह गई थी, बढ़ कर पशु-पक्षियों तक पहुँच गई थी। एक दिन उन्होंने देखा कि एक लड़का बहुत से पक्षी एक पिंजरे में बन्द किये बाजार में बेचने जा रहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। बात स्पष्ट थी कि वे पक्षी बाजार में बिकेंगे। लोग उन्हें खरीद कर ले जायेंगे और उनको मार कर शोरबा बना लेंगे। महात्मा फ्रांसिस ने उन फड़-फड़ाते हुए पक्षियों की पीड़ा अपने हृदय में अनुभव कर ली। वे उस लड़के के पास गए और बोले—"भाई तुम इन चिड़ियों को शायद इसलिए बेचने जा रहे हो कि इनसे जो पैसा मिलेगा उससे अपने भोजन की व्यवस्था करेंगे।"

लड़के ने तुरन्त स्वीकार किया और बतलाया कि—इन पक्षियों की कीमत से उसका तीन दिन का भोजन चल जाएगा। महात्मा फ्रांसिस ने कहा—"मैं तुम्हें छः दिन तक अपने पास से एक समय भोजन दे दिया करूँगा। यह पक्षी मुझे दे दो ?" लड़का खुशी-खुशी तैयार हो गया। महात्मा फ्रांसिस ने सारे पक्षी लेकर अपने हाथ से उड़ा दिये। पक्षी मानो, मुक्त होकर अपनी बोली में उन्हें धन्यवाद देते हुए हवा में तैरने लगे। महात्मा फ्रांसिस उनका वह आनन्द बड़ी देर तक देख कर खुद भी आनन्दित होते रहे।

वे केवल एक दिन में एक बार ही भिक्षाटन करते थे। फिर भी अपने वचनानुसार छः दिन तक अपना भोजन लड़के को देते और खुद भूखे रहते रहे। उन्होंने अपनी इस बात का किसी को पता नहीं चलने दिया। उन्हें डर था कि जान कर लोग उन्हें जबरदस्ती भोजन करने को मजबूर करेंगे और इस प्रकार उनका एक व्रत टूट जाएगा। यह कठोर उपवास चलाते हुए भी उनके चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता और ताजगी बनी रहती थी। परोपकार के लिए कष्ट उठाने में उन्हें अपार आनन्द आता था। अपने पर संयम करना उन्होंने भली प्रकार सीख लिया था। उन्हें महात्मा ईसा के इन वचनों में अगाध निष्ठा थी—"व्रत रक्खो, लेकिन दुःख मत करो।" उपवास में, त्याग में जीवन के सुखों से दूर रहो।" इससे व्रत पालन में सहायता भी मिलती है और आत्मा को सन्तोष भी।" उनके इस उपवास का पता लोगों को तब चला जब सातवें दिन अनुष्ठान पूर्वक उन्होंने अपना व्रत समाप्त किया।

एक दिन एक मछुए ने भिक्षा में उन्हें एक जलपक्षी भोजन के लिए दिया। महात्मा फ्रांसिस ने उसे ले तो लिया किन्तु तुरन्त ही उसे देर तक प्यार करने के बाद छोड़ दिया और कहा; "भाई मैं इन प्यारे पक्षियों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भोजन नहीं करता।" मछुआ उनका मूल आशय न समझ सका। निदान दूसरे दिन उन्हें एक बड़ी-सी मछली लाकर प्रदान की। महात्मा फ्रांसिस ने वह मछली भी एक बड़े तालाब में छोड़ दी और मछुए को बतलाया कि मैं किसी प्रकार का भी माँस नहीं खाता। इससे जीव-हत्या होती है जो कि प्रभु ईसा के दया, क्षमा एवं करुणा के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। मछुआ तो उनका मन्तव्य समझ कर चला गया लेकिन महात्मा फ्रांसिस को दोनों दिन भूखा रहना पड़ा। क्योंकि वे एक दिन में किसी एक से ही कुछ लिया करते थे।

महात्मा फ्रांसिस की अखण्ड साधना ने उन्हें तरुणावस्था में ही पूरी तरह सन्त बना दिया था। वे हर प्रकार के माया-मोह और आसक्ति, आकर्षण से मुक्त हो गए थे। उनकी कीर्ति जब चारों ओर फैलने लगी तब उनके पिता बहुत बार उनके पास आए और कहा कि वे सारी सम्पत्ति अपने हाथ में लें और जिस प्रकार चाहें उसे परमार्थ और परोपकार में खर्च करें। इस प्रकार अभाव और कष्ट का जीवन बिताने का क्या प्रयोजन? पर महात्मा फ्रांसिस इसके लिए तैयार न हुए। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि जिस धन-सम्पत्ति की असलियत उन्हें पता चल चुकी है, अब उसे वे अपने जीवन में स्थान नहीं दे सकते। जो आनन्द अभावपूर्ण, सादा जीवन बिताने में है, वह धन-सम्पदा में कहाँ? उन्होंने पिता को संतोष देते हुए कहा कि अब उनके पुत्र पर सीमित चहार-दीवारी नहीं रह गयी है बल्कि यह विस्तृत और व्यापक संसार ही उनका घर बन गया है और सारे प्राणी उनके परिजन। उन्होंने पिता से अपनी चिन्ता न करने को कहा और बताया कि वे पहले से कहीं अधिक सुखी और प्रसन्न हैं।

एक बार क्लेर नाम की बड़ी सुन्दर तरुणी उनके पास आई और अपने को सेविका रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की। महात्मा फ्रांसिस उनके मन्तव्य को समझ गए। उन्हें उसके अज्ञान पर बड़ी दया आई। वे बड़ी करुणा से बोले—"माता मैं स्वयं ही जनता का एक साधारण सेवक हूँ, मुझे किसी सेवक या सेविका की क्या आवश्यकता? आप तो जगत को जन्म देने वाली हैं उसके अनुसार मेरी भी जननी ही हैं। मैं अन्य से किसी प्रकार की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेवा लेने का अधिकारी नहीं हूँ।" महात्मा फ्रांसिस के पवित्र वचन सुन कर और उनकी महानता देख कर क्लेर पानी-पानी हो गई। उसे अपने पर घोर ग्लानि हुई। उसने महात्मा फ्रांसिस के पैर पकड़ लिये और कहा "अब आप मुझे अपनी शिष्या बना कर ज्ञान का दान करें नहीं तो मेरा हृदय पश्चात्ताप की आग में जल कर भस्म हो जाएगा।" उन्होंने उसे सन्त्वना और उपदेश दिया। आगे चल कर क्लेर बहुत बड़ी सन्त और धर्म-प्रचारक बनी।

स्वयं गृह त्यागी होने पर भी महात्मा फ्रांसिस ने किसी को गृह त्याग करने की अनुमति नहीं दी। वे बराबर लोगों को गृहस्थ धर्म का निर्वाह करते हुए अध्यात्मिक साधना करने की प्रेरणा दिया करते थे। वे अपने सारे अनुयायियों को गृहस्थ-साधक कह कर पुकारते थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को तीन श्रेणियों मे विभक्त कर जन-सेवा के कार्यों में लगा दिया था। पहली श्रेणी में वे लोग थे जिनको वे अपने साथ रख कर ऊँची साधना का अभ्यास कराया करते थे। दूसरी श्रेणी उन गृहस्थों की जो संसार के सारे कर्त्तव्य करते हुए लोक-कल्याण के मार्ग से ऊँचे शिखर को अग्रसर हो रहे थे। तीसरी श्रेणी उन्होंने नारियों के लिए रक्खी। जिनका कार्य गृहणियों को सुगृहणी बनने की शिक्षा देना होता था। इस प्रकार उन्होंने अपने सारे लोगों को उपयुक्त श्रेणियों में बाँट कर उन मार्गों पर चला दिया जिससे लोक-मङ्गल का भी सम्पादन हो और लोगों की व्यक्तिगत आत्मोन्नति भी होती चले।

महात्मा फ्रांसिस ने अपने अनुयायियों के लिए किन्हीं विशेष नियमों का निर्माण नहीं किया था। वे सबको प्राकृतिक नियमों का ही पालन करने की प्रेरणा देते रहते थे। उन्होंने कभी किसी को विशेष नियमों में बाँध कर उसकी निसर्ग प्राप्त स्वाधीनता को नहीं छीना। इस नियम में वे सदैव यही कहा करते थे कि 'मैं अपने साथियों का जेलर नहीं हूँ जो उन्हें नियमों में बाँध कर चलाऊँ। अपने धर्म का पालन, दूसरों की सेवा और आत्मा की रक्षा करना ही वे नियम हैं जिनका निर्वाह करते रहने पर मनुष्यों को फिर किन्हीं अन्य नियमों की आवश्यकता नहीं रह जाती। केवल इतना ध्यान रक्खो कि तुम्हारे बाह्याचरण मिथ्या न होने पावें। परमात्मा में अटल विश्वास रख कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्फूर्ति-प्रसन्नता, अनुकूलता और उपयुक्तता के साथ अपना जीवन बिताते रहो। बस इससे अधिक जीवन में किन्हीं नियमों की आवश्यकता नहीं है।"

इस प्रकार असीसी और उसके आप-पास जन-सेवा और सुधार का आन्दोलन चला कर महात्मा फ्रांसिस रोम गए। उन्हें देश का खण्ड-खण्ड रहना अब भी पीड़ा दे रहा था। रोम जाकर उन्होंने लोगों में एक राष्ट्र की भावना फैलानी प्रारम्भ कर दी। वे लोगों को युद्ध से दूर रहने और आपस में प्रेम के साथ रहने की प्रेरणा देने लगे। उनकी बड़ी इच्छा थी कि रोम का बड़ा पोप राष्ट्रीय शाँति की स्थापना करने में उनकी सहायता करे। पूरे इटली में पोप का प्रभाव था और वे इस प्रभाव को देश की शांति और अखण्डता में उपयोग करना चाहते थे। अस्तु एक दिन वे पोप से मिलने के लिए उसके निवास स्थान पर गए। पोप उनकी साधारणतः वेश-भूषा देख कर एक मामूली किसान समझा और अभिमान पूर्वक उन्हें भगा दिया। महात्मा फ्रांसिस ने इसका जरा भी बुरा न माना और शान्ति पूर्वक आकर जनता में काम करने लगे। धीरे-धीरे पोप को लोगों ने बतालाया कि असीसी के प्रसिद्ध महात्मा फ्रांसिस आजकल रोम में आए हुए हैं। पोप उनके विषय में बहुत कुछ सुन चुका था। मिलने के लिए उत्सुक हो उठा। उसने अपनी गाड़ी भेज कर महात्मा फ्रांसिस को बड़े आदर के साथ बुलवाया। महात्मा फ्रांसिस खुशी-खुशी पोप से मिलने चल दिये। किन्तु वे गाड़ी में नहीं पैदल ही गये। पोप से जब उनका मिलन हुआ तब उसने देखा कि ये तो वही व्यक्ति हैं जिनको उसने एक दिन अपने घर से भगा दिया था। उसे अपने किए पर लज्जा आई। उसने महात्मा फ्रांसिस का बड़प्पन स्वीकार किया और क्षमा माँगी। बाद में पोप ने राष्ट्रीय हित में उनकी बड़ी सहायता की और रोम के सुलतान से मिलाया। रोम का सुल्तान महात्मा फ्रांसिस के कार्यों, विचारों तथा व्यक्तिगत महानता से बड़ा प्रभावित हुआ और उनका अनुयायी बन गया। बाद में महात्मा फ्रांसिस ने उसे एक राष्ट्र की रूप-रेखा दी और स्थायी शान्ती स्थापित करने की प्रेरणा भी। यह महात्मा फ्रांसिस का ही प्रयत्न था कि कुछ दिनों बाद इटली में गृह-युद्ध होने बन्द हो गए और सभी राज्य एक राष्ट्र एक की भावना की ओर अग्रसर होने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महात्मा फ्रांसिस को प्रकृति से एक आत्मिक लगाव था। वे एक-एक फूल और एक-एक पत्ती को अपना आत्मीय जन समझा करते थे। वे वनो, बागों और रास्तों में खिले एक-एक फूल को बड़ी देर तक मन्त्रमुग्ध से देखते रहते थे। वे रास्ते के पेड़-पौधों पर अपना प्रेम बरसाते चलते थे और अपने साथियों से कहा करते थे कि यह सब प्रकृति स्वर्ग में रहने वाले हमारे पिता की रचनाएँ हैं ; जीवों के प्रति तो उन्हें इतना प्रेम था कि यदि रास्ते में उन्हें केंचुआ दिखलाई देता था तो चलना रोक कर पहले उसे उठा कर सुरक्षित स्थान पर रख देते थे और जब आगे बढ़ते थे। वे कहा करते थे कि इन सब प्राणियों को भी हम मानवों की तरह ही कष्ट और प्रसन्नता होती है। यह सब भी मनुष्य की तरह उस परम पिता को प्रिय हैं। इन्हें कष्ट पहुँचाने अथवा इनकी उपेक्षा करने का अधिकार किसी को नहीं है।

महात्मा फ्रांसिस जब कभी हरी-भरी वनस्पति अथवा फूलों से भरे किसी उद्यान में पहुँच जाया करते थे तो तत्काल ही भाव-विभोर होकर कहने लगते थे—ऐ ! सृष्टि के शृङ्गार फूलो, पौधो और पेड़ो तुम सब उस प्रभु के गुणगान क्यों नहीं करते जिसने तुम्हें इतना सुन्दर और इतना सुखी बनाया है ? वे पहाड़ो, नदियों, झीलों और झरनों को देख कर कहा करते थे—कि ऐ ! परमात्मा की रचनाओ तुम इस प्रकार मौन क्यों हो। मेरी ही तरह उस प्रभु की स्तुति के भजन क्यों नहीं गाते ? महात्मा फ्रांसिस सारी सृष्टि को पारमात्मामय और परमात्मा को सृष्टि में समझते और देखते थे।

संसार के सारे प्राणियों को वे अपना सहोदर समझ कर उनसे वैसा ही व्यवहार किया करते थे। एक बार जब वे एक वनस्थली में कुछ लोगों को उपदेश देने को उद्यत हुए तभी बहुत-सी चिड़ियाँ वहाँ आकर आस-पास के पेड़ों पर गाने और चहचहाने लगीं। महात्मा फ्रांसिस ने बड़ी नम्रता से हाथ जोड़ कर उनसे कहा—"प्यारी बहनों ! जब आप लोगों का सङ्गीत समाप्त हो जाय तब मुझे भी कुछ कहने देना।" इस प्रकार प्रकृति के साथ एकरूपता के उनके न जाने कितने उदाहरण पाये जाते हैं। वे जब तब लोगों से कहा करते थे कि जब मैं किसी को पशु-पक्षी का शिकार करते देखता हूँ तो मुझे अपार कष्ट होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है । हम लोग अपने को महात्मा ईसा का अनुयायी बतलाते हैं और उनके सिद्धान्त के विरुद्ध नित्य ही पशु-पक्षियों की हत्या करते हैं। क्या इस प्रकार हम उनकी आत्मा को दुख नहीं पहुंचाते—"यदि हर एक नगर में नगर-पालक और हर किले के सरदार मुझे वचन देते कि वे प्रभु ईसा के जन्म-दिन पर मैदानों और जंगलों में चिड़ियों और अन्य छोटे-छोटे जानवरों के लिए अनाज बिखराने की व्यवस्था कर देंगे तो शायद मुझे जीवन की सबसे बड़ी खुशी मिल जाती।

इस प्रकार कठिन तपस्या और जन-सेवा का व्रत चलाते हुए जब महात्मा फ्रांसिस आयु की तीन सीढ़ियाँ चढ़ गये तब उनका शरीर बहुत शिथिल रहने लगा। अब उनकी इन्द्रियां भी धीरे-धीरे जवाब देने लगी थीं। उन्होंने इन लक्षणों का आशय समझ लिया और अधिकाधिक साधना में रत रहने लगे। अब वे अधिकतर अलवानो के पहाड़ पर एकान्त में चले जाते थे और महीनों भगवत् उपासना में लगे रहते थे। उनके शिष्यों ने चोरी-चोरी एक बड़ा सुन्दर भवन बनाया उसमें जीवन की सारी सुख-सुविधाएँ एकत्र कर दीं। भवन जब बनकर तैयार हो गया तो उन्होंने एक दिन उन्हीं के हाथों से उसका उद्घाटन कराया और आदर पूर्वक उन्हें समर्पित किया। महात्मा फ्रांसिस को पता चला कि वह भवन उन्हीं के लिए बनवाया गया है तो वे दुःख और क्षोभ से रोने लगे। उन्होंने कहा—"मुझे दुःख है कि मेरे साथियों ने जीवन-भर रह कर भी कुछ नहीं समझा। जरूर ही मेरी साधना में कोई कमी रह गई है जिससे मुझे इस प्रकार अपरिग्रह से हटाने का साहस किया गया हैं। न जाने लोग यह क्यों नहीं समझ पाए कि जो जीवन-भर संसार के निःसार सुख-साधनों से भागता रहा वह क्या अन्त समय में महल में रहेगा? मुझे खेद ही नहीं अपने पर ग्लानि है, मेरी तपस्या अभी कम है। मैं अभी ईसा का काँटों का ताज पहनने योग्य नहीं हो पाया हूँ। अब मैं साधना द्वारा ही अपनी इसी कमी का परिमार्जन करूँगा।"

फिर तो महात्मा फ्रांसिस सारे समय परमात्मा के ध्यान में ही निमग्न रहने लगे। परमात्मा का भजन गाना और उसका स्मरण करना ही उनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एकमात्र काम रह गया। वे अधिक से अधिक उपवास और व्रत रखने लगे। और जो कुछ थोड़ा-बहुत खाते भी थे वह बिना पकाये ही खाते थे। किसी प्रकार के स्वाद से उन्होंने अपना कोई सम्बन्ध नहीं रक्खा।

इस प्रकार कठिन साधना करते और परमात्मा का गुण गाते-गाते वे जमीन पर लेट गये और अपने साथियों से बोले—"अब आप लोग मुझे बिदा दें, स्वर्गीय पिता के घर जाने का समय आ गया है। जीवन में सत्य और सदाचार को धारण करना। प्राणीमात्र पर दया करना और परमात्मा को कभी एक क्षण को भी न भूलना। बस यही आप लोगों से मेरा अन्तिम सन्देश है। बिदा, बिदा, बिदा—कहते-कहते उन्होंने सदा के लिये इस संसार से बिदा ली और अपने स्वर्गीय पिता की गोद में खेलने के लिये चल दिये।

महात्मा फ्रांसिस अपने समय के बहुत बड़े महात्मा थे। उनके कार्यों और विचारों ने योरोप में एक सुधार की एक नई क्रान्ति ला दी। जीवन-भर उन्होंने अपने में ईसा की भावना मूर्तिमान करने के लिये घोर तपस्या की और उसी के बल पर हजारों-लाखों भूले-भटकों को सही रास्ते पर लगाकर अध्यात्म ज्ञान का सच्चा और सरल प्रसाद बाँट गये।

हमारा भारतवर्ष भी सन्तों की भूमि माना जाता है और निःसन्देह यहाँ पर बीच-बीच में ऐसे सन्तों का प्रादुर्भाव होता रहता है जिनको जीवनमुक्त करने में किंचित भी अतिशयोक्ति नहीं है। सन्तों का जीवन परोपकार और परमार्थ के लिये होता है और वे अपने से शत्रुता रखने वाले के साथ भी दुर्व्यवहार नहीं करते। बुराई के बदले भलाई करना उनका मुख्य गुण होता है। पिछले दो-तीन हजार वर्षों के इतिहास पर दृष्टि डालो तो बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुज, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, तुलसीदास, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि व्यास अनेकानेक सन्तों ने इस भूमि पर जन्म लेकर जन-साधारण को पारमार्थिक जीवन की प्रेरणाएँ दी हैं। इन लोगों का जीवन एक प्रकाश स्तम्भ की तरह रहा है जिससे लाखों-करोड़ों व्यक्ति अपने सम्पर्क में आने वाले अन्य मनुष्यों तथा विभिन्न प्राणियों के साथ प्रेम, सहानुभूति, सेवा का व्यवहार करने को प्रवृत्त होते हैं। यदि हमारे बीच में समय-समय पर सन्तजनों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अविर्भाव न होता रहता तो मनुष्य दिन पर दिन अधिकाधिक स्वार्थी, कठोर, निर्दयी बनते जाते इसमें सन्देह नहीं। मनुष्य स्वार्थपरता की तरफ बहुत शीघ्र और सहज में प्रेरित होता है और उसके उदाहरण भी उसको अपने चारों ओर बहुत मिलते हैं। ऐसी परिस्थिति में यह सन्तों की ही महिमा होती है कि वे त्याग, तपस्या और कष्ट-सहन द्वारा दूसरों की भलाई का व्रत ग्रहण करते हैं और संसार में बहती हुई आपा-धापी की धारा को मोड़ कर अनेक मनुष्यों के हृदय में परोपकार की भावनाओं को जागृत करते हैं। सन्तोंकी इन विशेषताओं को प्रकट करते हुये 'भारत के सन्त महात्मा' ग्रन्थ में बतलाया गया है कि सन्त के कार्यों और चरित्रों से जन-साधारण को केवल आध्यात्मिक प्रेरणायें ही प्राप्त नहीं होतीं, वरन् समाज की सर्वाङ्गीण उन्नति के मूल में भी सच्चे सन्तों का बड़ा सहयोग रहता है।

"समस्त युगों में सन्त-महात्माओं की परम्परा ही भारत देश की अमूल्य निधि रही है। उदात्त सन्त-महात्माओं की जीवन-कथायें तथा उनकी उपदेशावलियाँ ही सबसे अधिक बहुमूल्य सम्पत्ति के रूप में हमको अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई हैं। आज तक भारत के लम्बे इतिहास के प्रत्येक युग में वेद, उपनिषद्, महाकाव्य, पुराण, काव्य, रूपक, संगी, स्थापत्य, चित्रकला तथा लोकगीत आदि अनेक रूपों में ऋषि, मुनि, योगी, भक्त, ज्ञानी और निष्कामकर्मी के ही तेजोमय—जीवन तथा अध्यात्मिक अनुभूति से भारतीय संस्कृति के आत्माभिव्यञ्जन को प्रेरणा मिलती आई है। भारत के सच्चे निर्माता वे हीं हैं। भारत की चिरन्तर चेतना उनके ही जीवन में साकार और सजीव हुई है। निस्सन्देह भारतवर्ष ने विभिन्न युगों में बड़े-बड़े योद्धा, शासक, साम्राज्य स्थापक और राजनीतिज्ञों को जन्म दिया है, उन्होंने अपने समय के भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किये हैं' पर भारतीय स्मृति-पटल पर उन्हें गौण स्थान प्राप्त है और उनमें भी केवल उन्हीं का जीवन स्थाई स्मृति का विषय बन सका, जिन्होंने व्यवहार में महत्वपूर्ण सन्तत्व प्राप्त कर लिया और अपने साथियों की नैतिक तथा अध्यात्मिक उन्नति के लिये अपनी सम्पत्ति और ज्ञान का सर्वोत्तम सदुपयोग किया। भूत की तरह भविष्य में भी संत-महात्माओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के जीवन तथा उपदेश समस्त जनता के लिये सदा ही ज्ञान, शक्ति, आशा और शान्ति के स्रोत बने रहेंगे।"

जो बात हम भारतीय सन्तों के लिये इस देश की जनता की दृष्टि से कह सकते हैं योरोप के लिये संत फ्रांसिस की भी समझी जा सकती है। भौतिकवाद का प्रचार अत्यधिक बढ़ जाने पर भी आज जो योरोपीय सामान्य—जनता में जो धर्म का भाव मौजूद है और सेवा तथा सहायता के कार्यों में वे जिस प्रकार दिल खोल कर तथा मुक्त-हस्त से भाग लेते हैं वह सन्त फ्रांसिस जैसे महामानवों का ही प्रसाद है। जब लोग उनके महान् त्याग और अनुपम सेवा कार्यों का वर्णन पढ़ते और सुनते हैं तो उनकी आत्मा में सुप्त भावनायें जाग उठतीं हैं और वे अवसर मिलने पर यथाशक्ति परोपकार के मार्ग पर चलने का प्रयत्न भी करते हैं।

यह सच है कि साँसारिक-जीवन निर्वाह करते हुए सब लोग सन्तफ्रांसिस के समान प्राणी-मात्र की रक्षा और कल्याण का सदा ध्यान नहीं रख सकते, तो भी उनके जीवन की घटनाओं से कुछ शिक्षा ग्रहण करना और जब जितना अवसर मिले उन्हें न्यूनाधिक अंशों में काम में लाना हम सबका कर्त्तव्य है। वे तो पशु-पक्षी, चिड़िया, कीड़े-मकोड़ों तक की रक्षा में सदैव बड़े प्रेम का व्यवहार करते थे। यदि साधारण मनुष्य इतना नहीं कर सकता तो इतना तो ध्यान रख ही सकता है कि निर्बल मनुष्यों और अनबोल निरीह प्राणियों के साथ कठोरता अथवा निर्दयता का व्यवहार न करे। संत फ्रांसिस चाहे जब अपना भोजन किसी जरूरतमन्द को दे देते थे और स्वयं भूखों रह जाते थे। उनके उदाहरणों को देख कर हम भी संयोगवश कष्ट और अभाव में ग्रस्त होने वाले लोगों की सहायतार्थ अपने व्यय में कमी कर के परोपकार-वृत्ति का परिचय दे सकते हैं।

वर्तमान समय में हम जिस युग में रह रहे हैं उनकी भयङ्करता को देखते हुये तो सन्तों के उपदेश और प्रणाली पर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है। इस समय वैज्ञानिक उन्नति के फलस्वरूप मनुष्य के हाथ में कुछ ऐसी शक्तियाँ आ गई हैं कि वह चाहे तो संसार का बहुत कुछ कल्याण कर सकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है और यदि विपरीत बुद्धि से काम ले तो करोड़ों का काम भी कर सकता है। आजकल संसार के प्रमुख राजनीतिज्ञ और धनकुबेर, उद्योगपति शक्ति और वैभव के मद से उन्मत हो रहे हैं और आस्तिकता, आध्यात्मिकता तथा नैतिकता आदि की बातों को निरर्थक बतलाते हैं। यदि यही प्रवृत्ति बढ़ती गई और किसी तरह से इसमें अंकुश लगाने की व्यवस्था न की गई तो संसार की घोर दुर्दशा होना निश्चित ही है। इस दृष्टि से सन्त फ्रांसिस जैसे दैवी आत्म-सम्पन्न महा-मानवों के चरित्र का अध्ययन मनन निश्चय ही कल्याणकारी है।

सन्तों के जीवन का अनुशीलन करते समय उनके देश और जाति आदि के पार्थक्य का ख्याल करना कुछ महत्व नहीं रखता। सन्त फ्रांसिस का जन्म यद्यपि इटली देश में हुआ था, पर उनका सादा जीवन, प्राणीमात्र से प्रेम, स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों को सुख पहुँचाना आदि ऐसे सद्गुण हैं जो हमारे देश के सन्तों में भी जैसे के तैसे पाये जाते हैं और उन्हीं के कारण उनका सम्मान होता है। ऐसे प्रभु के प्यारे व्यक्तियों से कौन न प्रेम करेगा ? सन्त फ्रांसिस जैसे सन्त कहीं भी हों वे मानव मात्र की वन्दना के पात्र हैं।

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों को जीवन-गाथाओं को अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयम् पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

As U 5 U

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org